हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या - 06

दिनांक
12/08/2020

* मीराबाई के काव्य पर प्रकाश डालें ?

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल को स्वर्णकाल माना जाता है। इस युग में एक ऐसी साहित्य धारा प्रचलित हुई जिसने साहित्यरूपी सागर का मँथन कर मूल्यवान कवि रत्न बाहर निकाले। यहाँ भक्ति की एक शाखा निर्गुण भक्ति शाखा तथा दूसरी सगुणोपासक भक्ति शाखा है। सगुणोपासक भक्ति शाखा रामभक्ति शाखा तथा कृष्ण भक्ति शाखा के रूप में विकसित हुई है। भक्तिकालीन कवियों में इसी कृष्णभक्ति शाखा में मीराबाई का नाम आता है। भावात्मक एकता की प्रतीक मीराबाई ने देश की नैतिकता एवं संस्कृति को नया मोड़ दिया है। उसका सुन्दर निर्मल चरित्र अनन्य प्रभु प्रेम अनुपम भक्ति साधना जनजीवन में आदर्श नारीत्व का प्राकट्य काल शक्ति माधुर्य एवं ज्ञान की अभिलाषा रहा है।

मीरा का काव्य उन विरल उदाहरणों में है जहाँ रचनाकार का जीवन और काव्य एक दूसरे में घुल-मिल गए हैं, परस्पर के संपर्क से वे एक दूसरे को समृद्ध करते हैं, इसका अर्थ यह भी है कि जीवन-वृत से अलग होकर भी इस काव्य की सर्जनात्मक क्षमता घट जाती है। मिलना-जुलना नारी-चरित्र होने के कारण गोपियों की विरह-भावना का अध्यारोपण मीरा पर आसानी से हो जाता है। उनका काव्य सूर द्वारा विस्तार में चित्रित गोपियों की विरहोन्मुखता का ब्यौरा है। जीवन-वृत में ब्रज की गोपियों से, और रचना-धर्मिता में सूरदास से एकबारगी साम्य मीरा के पदों में अतिरिक्त तीव्रता भरता है। मीरा की काव्य-भाषा में वह भलीभाँति प्रतिफलित होती दिखती है।

मीरा के अनेक पदों में अपने प्रिय के लिए जो 'जोगी' संबोधन और तदनुसार रूप-विधान आता है वह सूर के इस 'श्याम-शिव' ध्यान से तुलनीय है। 'जोगिया से प्रीत किएँ दुख होई', 'जोगी मत जा मत जा मत जा'। 'जोगी म्हाँने, दरस दियाँ सुख होई'; 'जोगिया ने कहज्यो जी आदेश' में पद का आरंभ जोगी या जोगिया से उल्लेख होता है और अंत में गिरधर नागर या श्याम का ध्यान आता है। प्रेम और भक्ति के संपृक्त रूप में आलंबन के लिए कृष्ण और शिव का यह संपृक्त रूप आदर्श है। व्यक्तिगत सन्दर्भ से विशेषतः मीरा के कृतित्व में प्रेम और भक्ति के पक्ष सहज भाव से घुल-मिल गए हैं। यह संपृक्त अनुभूति, जो कबीर और जायसी में अलग-अलग रहस्यवादी प्रतीक-पद्धति में ढलती है और सूर में कृष्ण-राधा का प्रणय-चित्र बनती है, मीरा में सहज आत्मानुभूति का गीत बन जाती है।

कबीर की तरह ही मीराबाई की काव्यभाषा के आधार में कई बोली-रूप मिश्रित हैं। 'मीराबाई की पदावली' की भूमिका में परशुराम चतुर्वेदी ने दिखाया है कि मीरा में चार भाषा-स्तरों का प्रयोग है- राजस्थानी, ब्रजभाषा, पंजाबी और गुजराती।

आधुनिककालीन भाषाओं और इनकी पारस्परिक स्थिति के संबंध में ग्रियर्सन का मंतव्य अनायास स्मरण हो जाता है। ग्रियर्सन ने लिखा है "जिस प्रकार पंजाबी उत्तर-पश्चिम में मध्यदेश की प्रसृति

भाषा का प्रतिनिधित्व करती है उसी प्रकार राजस्थानी उसके दक्षिण-पश्चिम में प्रसारित भाषा का प्रतिनिधित्व करती है। इस अंतिम प्रसार-कार्य में मध्यदेश की भाषा राजस्थानी क्षेत्र से होती हुई गुजरात के समुद्र तट तक पहुँच गई है। यहाँ यह गुजराती का रूप धारण कर लेती है।"

मीरा की काव्यभाषा में ग्रियर्सन के इस भाषावैज्ञानिक पर्यवेक्षण की व्यावहारिक रूप में संपुष्टि करते हैं, और व्रजभाषा-राजस्थानी-पंजाबी-गुजराती की तात्विक एकता को प्रदर्शित करते हैं। व्रज से द्वारका तक चलने वाली कृष्ण-भक्ति की यात्रा ने जैसे इन भाषा-रूपों को परस्पर मिला दिया हो। मीरा की अपनी काव्य-यात्रा इसी के समानांतर है। यहाँ यह स्मरणीय है कि मीरा ने अपने पूरे के पूरे पद इन अलग-अलग बोली-रूपों में नहीं लिखे वरन् अधिकतर उनकी आधार भाषा में इन कई भाषिक तत्वों का मिश्रण हो गया, प्रधानता व्रज और राजस्थानी की है।

मीरा की काव्यभाषा में सर्जनात्मक भाषा क्षमता कम है। सूर या तुलसी जैसा भाषा का कुशल प्रयोग नहीं दिखाई देता। यहाँ लोकगीतों की तरह सीधी अभिव्यक्ति पर बल है, लाक्षणिक प्रयोग बीच-बीच में जहाँ-तहाँ भले मिल जाएँ। नारी होने के कारण मीरा की तन्मयता और विरह-भावना कुछ अपने-आप से प्रामाणिक लगती है, उनके पदों का

भाषिक गठन उतना सशक्त नहीं है।

'दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल सबद सुनावै
घुमर घटा ऊलर हुई आई, दामिन दमक डरावै'॥

यहाँ सीधा परंपरित वर्णन है, भाषिक प्रयोग से कोई विशिष्ट अर्थ-क्षमता उत्पन्न नहीं होती। इसलिए कुछ पद विधान में सूर जैसे लग सकते हैं, पर उनमें वैसा निखार नहीं। कुल मिलाकर मीरा के काव्य में व्यक्तिगत तन्मयता का विस्तार अधिक है, कविता का दक्ष कम। मीरा के पदों में काव्यभाषा अनुभूति के सहज उच्छ्वास है। मीरा के काव्य में उपमा, रूपक विरोधाभास आदि अलंकार का प्रयोग मिलता है।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० — 829227104।
ईमेल — benamkumar15@gmail.com

दिनांक
12/08/2020